

गोवा के तट का समुद्री पुरातात्विक अन्वेषण – निष्कर्ष और व्याख्या

■ सिला त्रिपति
■ राकेश शर्मा

सार

पुराने जहाजों और बंदरगाह के ठिकानों का पता लगाने के लिए गोवा के तटीय समुद्री जल में समुद्री पुरातत्व अन्वेषण किया गया। सुंची रीफ़, सेंट जार्ज रीफ़ बागा, आइसलैंड तथा अगुआडा, गोपका-पहना आदि जगहों पर अन्वेषण का कार्य किया गया। सुंची रीफ़ के अन्वेषण के दौरान 17वीं सदी के एक जहाज का अन्वेषण किया गया। इसके साक्ष्यों से पता चलता है कि यह जहाज़ पुर्तगाल काल का था। सेंट जार्ज रीफ़ के अन्वेषण में भी एक जहाज बरामद हुआ जो उन्नीसवीं सदी का था। सेंट जार्ज रीफ़ के बरामद जहाज़ के मलबे से मालूम पड़ता है कि वह **Basel mission company** का था। अन्तः जल अन्वेषण के दौरान ग्रैंड आइसलैंड के एक बड़े क्षेत्र में फैले मलबे से **steel-bulld** बरामद हुए जो एक सदी से भी ज्यादा पुराने थे। अगले अन्वेषण में सुंची रीफ़, ग्रैंड आइसलैंड और बागा आदि जगहों से **light stone anchor** और अगवदा से लंगर प्राप्त हुआ।

तटवर्तीय अन्वेषण और कठिन प्रयासों से पता चला कि गोपाकापटना के पास एक पत्थर की दीवार समानान्तर रूप से जुआरी नदी तक गई हुई है। कई स्थानों पर पत्थर की यह दीवार सतह में विलुप्त हुई सी मालूम होती और अनियमित भी है। कुछ स्थानों पर यह दीवार जिसमें कि छह पत्थरों की सीढ़ी तट से मुख्य दीवार तक जाती है के साथ कुछ बुर्ज दिखाई पड़ते हैं। हालांकि इन उत्खननों से कोई ऐसा निष्कर्ष सामने नहीं आया है जिसकी तारीख निर्धारित की जा सके। परंतु गोपाकापटना क्षेत्र जोकि पीलर संग्रहालय में प्रदर्शित है के अनुसार यह कोई प्राचीन बन्दरगाह था।

यह निष्कर्ष गोवा के विश्व के अन्य भागों के साथ व्यापार और वाणिज्य को दर्शाते हैं जैसा कि प्राचीन साहित्य में इसका वर्णन है। गोवा का तट जल के नीचे और खासकर जहाज़ी भग्नावशेष के अध्ययन के लिए अत्यधिक संभाव्यता प्रदान करता है।

प्रमुख शब्द – बंदरगाह, जहाज़ी भग्नावशेष, लंगर, समुद्र तटीय पुरातत्व, पुर्तगाल, गोवा

परिचय

समुद्र तटीय पुरातत्व विज्ञान एक अंतरविषयक अध्ययन है एवं इसे अंतःजलीय पुरातत्व विज्ञान या समुद्री पुरातत्व विज्ञान का नाम भी दिया गया है। समुद्रीय पुरातत्व विज्ञान को मनुष्य द्वारा समुद्र पर उसके द्वारा संगठित समुद्रीय गतिविधियों से उत्पन्न सामग्री के अतीत का वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में संदर्भित किया जाता है। नाविकीय पुरातत्व का मुख्य उद्देश्य विभिन्न प्रकार के समुद्रीय पोतों, उनकी संरचना तकनीक और उसके विभिन्न उपयोगों का अध्ययन है जबकि समुद्रीय पुरातत्व समस्त प्रकार की समुद्रीय गतिविधियों जिसके अंतर्गत व्यापार, वाणिज्य, विनिमय, जल परिवहन तकनीक, मल्लाह का कार्य, तटीय वस्तियां, बन्दरगाह आदि को अपने दायरे में समाहित करता है। दूसरी ओर समुद्रीय पुरातत्व को अंतःजलीय पुरातत्व के रूप में भी परिभाषित किया जाता है।

समुद्री पुरातत्वविद् का कार्य केवल पुरास्थल का उत्खनन करना ही नहीं है बल्कि पुरातात्विक संभावनाओं को खोजना, पुरास्थलों का अन्वेषण एवं उत्खनन का उपक्रम, प्रबंधन एवं एक विस्तृत समुदाय के समक्ष उस स्थल की संस्तुतियां और व्याख्या प्रस्तुत करना भी है। ऐसे कई बंदरगाह शहर और आवासीय स्थल हैं जिनका अतीत में अस्तित्व था परंतु वर्तमान में वह या तो समुद्र में समा गये हैं अथवा समुद्र स्तर में सापेक्षिक परिवर्तनों या अन्य कारणों से समुद्र से दूर हो गए हैं। उसी प्रकार कई जहाज़ छिछले अथवा गहरे पानी में गैर-अनुभवी नौचालन, प्राकृतिक आपदाओं, युद्धों, अति-लदान, आदि के कारण विनष्ट हो गए हैं। मानव जाति के समुद्री इतिहास के पुनःनिर्माण हेतु सभी समुद्री पुरास्थलों का अन्वेषण, संरक्षण और व्याख्या की जानी चाहिए।

समुद्री पुरातत्वविद् के लिए यह आवश्यक है कि वो अभिलेखों के गूढ़लेखों का संकेत-वाचन करे एवं अतीत और वर्तमान के मध्य संपर्क स्थापित करे। तटीय क्षेत्रों में तीव्र औद्योगिकीकरण एवं बंदरगाहों का निर्माण गतिविधियां अतीत की सभ्यताओं के साक्ष्यों को सदा के लिए नष्ट कर सकती है। अतः यह आवश्यक है कि ऐसे तटीय क्षेत्र में समुद्री पुरातात्विक अन्वेषणों को अनिवार्य किया जाना चाहिए जहां किसी भी प्रकार की

विकासात्मक गतिविधि जैसे पत्तन, बंदरगाह, उद्योग, पर्यटन आदि के विकास का कार्य चल रहा हो। समुद्री जल के नीचे पड़ी पुराकालीन वस्तुएं और कलाकृतियां हमारी सांस्कृतिक विरासत हैं। यह समुद्री पुरातत्वविद् की जिम्मेदारी है कि वो इन्हें लोकलोचन में लाए एवं भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित करे।

गोवा का समुद्री इतिहास

गोवा का आकार लगभग त्रिकोणीय है और इसका संपूर्ण पश्चिमी क्षेत्र अरब सागर से और बाकी का क्षेत्र पश्चिम घाट के द्वारा आवेष्टित है। गोवा को पेरिप्लस आफ एरिथ्रियन सी (100 ईसवी) (स्कोफ़ 1974) के लेखक के द्वारा एजिदी या एजिदियोइ, 150 ईसवी के ग्रीक भूगोलवेत्ता पोलेमी द्वारा कौबा या कोवा, (मैक क्रिंडले 1885) और प्लीनी के द्वारा गोवा के रूप में परिभाषित किया गया है। परोदा नदी (जुआरी नदी की एक सहायक नदी) के मुहाने पर स्थित चंद्रपुरा या आधुनिक चंदोर गोवा का सर्वप्राचीन पत्तन है। चंद्रपुरा का उत्खनन से ईसापूर्व दूसरी सदी (हेरास 1932) की सातवाहन ईंटें और पात्र प्राप्त हुए हैं। इसके अलावा दूसरे बंदरगाह थे महाराष्ट्र के वल्लिपट्टना और रेवातिदविपा (वर्तमान का रेदी) जहां से जहाज़ सूती सामान, हीरे, मूल्यवान रत्न, मसाले और इत्र (शिरोडकर 1990) लेकर अफ्रीका और अरब के तटों पर जाते थे। गोपाका स्थित कदंबा राजवंश के जयकेशी- की ताम्रपट्ट में यह वर्णन है कि सन् 1049 के आसपास राजधानी चंद्रपुरा से गोपाकापट्टना को स्थानांतरित कर दी गई थी जिसका संभावित कारण नदी में गाद जमना हो सकता है। गोपाकापट्टनम के निकटस्थ पिलर टैंक से प्राप्त रोमन सिक्कों, एंफोरा के टुकड़ों तथा मृदभांडों से यह संकेत मिलते हैं कि सातवाहन काल (कोस्टा 1997) में रोमन जहाज़ गोवा के तटों पर बुलाये गये थे। शिलाहारा और कदंबा तत्कालीन नौ शक्तियां थीं और उन्होंने पश्चिम एशिया और पूर्वी अफ्रीकन देशों (गुने 1990) के साथ अपने व्यापार संबंधों का निर्वाह किया था। इस क्षेत्र की परवर्ती नौ गतिविधियां चार स्मारक प्रस्तरों में प्रतिफलित होती हैं जिसमें जहाज़ों के साथ नौ युद्धों के दृश्य खुदे हुए हैं और वर्तमान में यह प्रस्तर ओल्ड गोवा के पुरातात्विक संग्रहालय में प्रदर्शित हैं। 12वीं सदी के दौरान गोवा के कदंबों का उत्तर कोंकण पर निरंतर नौ आक्रमण ही संभावित रूप से इन स्मारक प्रस्तरों पर चित्रित किए गए हैं। (राजगोपालन 1987)

पर्तुगाली शासक अल्फांसो डी अब्लुकर्क ने सन् 1510 में बीजापुर के अदिल शाही सुल्तान से केवल शासन करने के लिए हासिल नहीं किया बल्कि उसे गोवा और आसपास के क्षेत्र के

पोतनिर्माण उद्योगों पर भी कब्जा करना था। पर्तुगाल शासनकाल में अरब, चीन, जावा, मालदीव, मोजाम्बिक और श्रीलंका से व्यापारी व्यापार और वाणिज्य के लिए ओल्ड गोवा आते थे क्योंकि तब यह प्रमुख व्यापारिक शहर था। ओल्ड गोवा में तब गेरिसन, मिंट आदि जहाज़ निर्माण यार्ड थे। पर्तुगाल भारत के समय बासेयीन, कोचीन, दमन और ओल्ड गोवा जहाज़ निर्माण केंद्र के रूप में जाने जाते थे। पर्तुगाल शासनकाल के दौरान ओल्ड गोवा स्थित गोदी बाड़ा सर्वाधिक संगठित नौ संगठन था। नाऊ सिनो चागास, गालिआओ बोम जीसस, माद्रे डे डियुस और नाऊ एस. जोआ बापतिस्ता आदि गोवा शिपयार्ड में निर्मित प्रमुख जहाज़ रहे थे। भारत और पर्तुगाल के बीच चलने वाले जहाज़ की क्षमता आम तौर पर 400 टन की होती थी। सन् 1570 के आसपास जहाज़ों का टनभार 600 टन तक बढ़ाया गया। (मेथ्यु 1988)

गोवा के समुद्री क्षेत्रों में जहाज़ों के भग्नावशेष

दुर्भाग्यवश पर्तुगाल काल से पूर्व के जहाज़ों के भग्नावशेष उपलब्ध नहीं हैं। जहाज़ों से संबंधित समुद्री एवं अन्य पर्तुगाल रिकार्ड जोकि इंडिया हाऊस, लिस्बन में रखे गये हैं के अनुसार सन् 1497 से 1612 के दौरान अपनी पर्तुगाल से गोवा और वापसी की समुद्री यात्रा के दौरान कई जहाज़ डूबे थे। (मेथ्यु 1988) गोवा राज्य अभिलेखागार, पणजी में सुरक्षित रिकार्ड यह संकेत करते हैं कि अधिकांश जहाज़ों के विनष्टि की घटना गोवा के उथले पानी में विषम स्थलाकृति एवं अनेकों तूफानों के कारण घटी थी। अनेकों समुद्री रिकार्ड इस तथ्य को दर्शाते हैं कि अधिकांश पर्तुगाली जहाज़ मांडोवी नदी के रेट-टीलों पर ध्वस्त हुए थे।

जोकि गोवा तट पर ध्वस्त हुए कुछ जहाज़ों के नाम इस प्रकार हैं एस. क्रिस्टोवाम, गोवा से लौटते वक्त 17 अगस्त 1594 को तूफान के कारण ध्वस्त हुआ, नाऊ सांटो आन्द्रे जोकि ब्रिटो दे मेलो के अधीन 17 फरवरी 1607 को लिस्बन से छुटा था एवं मई 1608 में गोवा के तट पर पहुंच कर डूब गया। एक अन्य पर्तुगाली जहाज़ नोस्सा स्रा डोस और रेमेडिओस तूफान में फंसकर गोवा के तट पर 28 जनवरी 1616 को डूब गया, इसके यात्री बचा लिए गए हालांकि इस पर लदा सामान खो गया। (गुडिगर एवं सुंदरेश 1992)

कलकत्ता (कोलकाता) जाने वाले बारह पर्तुगाली जहाज़ गोवा के अगुडा तट के निकट डूब गये। वैसे ही सात छोटे जहाज़ नेरुल नदी के में अप्रैल 1648 में चक्रवाती तूफान गुम हो गए एवं

इसमें दस लाख जेराफिन खो गए। 1651 में पुर्तगाल से गोवा के लिए चले पांच पुर्तगाली जहाज़रानी के जहाज़ जिनके नाम क्रमशः सेंट हेलेना, एस.जोन, एवानजेलिस्ता, सेंट. फ्रांसिस्को एवं सेंट टोम थे में से केवल दो जहाज़ गोवा के तट पर पहुंच सके और वे भी 10 मार्च 1651 को तूफान में फंसकर नष्ट हो गए। एक पुर्तगाली पाटाक्सो सांटा तेरेज़ा दे जेसस बासिन और चल की समुद्री यात्रा के लिए निकला था परंतु गोवा के तट पर 18 मई 1658 को डूब गया। इस दुर्घटना में कुछ सामान डूब गया और कुछ लूट लिया गया। बहुमुल्य पत्थरों का एक बैग जोकि मनोएल दिआस नामक जहाज़ पर था जोकि समुद्र में डूब गया था (चौहान 1988)। उसी प्रकार ब्रिग चैंपियन नामक जहाज़ भी गोवा के तट के प्रवेशद्वार पर बालू के टीले पर नष्ट हो गया।

ध्वस्त जहाज़ों का अन्वेषण

सुंची रीफ, सेंट जॉर्ज रीफ, ग्रेंडे द्वीप, बागा, ओल्ड गोवा एवं गोपकपट्टना के तटीय क्षेत्र में तटीय जल में अंतःजल अन्वेषण किया गया। सीबैड की प्रकृति, वर्तमान स्वरूप, पानी की गहराई, और दृश्यता में भिन्न भिन्न स्थलों पर विभेद्य पाया गया। सुंची रीफ, सेंट जॉर्ज रीफ, ग्रेंडे द्वीप, बागा, ओल्ड गोवा और गोपकपट्टना की निम्नलिखित में व्याख्या की जा रही है

सुंची रीफ

सुंची रीफ का क्षेत्र उथला, लेटेराइट के छोटे-बड़े पत्थरों से भरा है और उच्च ऊर्जा क्षेत्र में आता है। 3 से 6 मीटर और उससे भी अधिक गहराई पर एक बड़े क्षेत्र का पता लगाया गया है। (चित्र-1) जहाज़ों के मलवे इसी बड़े क्षेत्र में फैले हुए हैं। इसी पानी के अन्वेषण के दौरान पानी के भीतर से एक एक हेंडगन, चार लोहे की बंदूक, एक लोहे की गोली, पत्थर और मिट्टी के बरतन, विभिन्न आकार की कांच की बोतलें, हाथी के विभिन्न आकार के दांत, दरियाई घोड़े के दांत, धातु के हैंडल, तैयार ग्रेनाइट पत्थर का ढेर बरामद हुआ है (सिला त्रिपती, आदि. 2004) ग्रेनाइट पत्थर के ब्लाक के नीचे आधी फंसी हुई एक बंदूक मिली है जिसका बैरल पित्तल का था। इसकी लंबाई 5.6 से.मी. और बजन 2.200 की.ग्रा. था। इसके बैरल की मोटाई सामने के मुकाबले पीछे की ओर अधिक थी। बैरल में दो खांचे थे जिनमें से एक सामने की तरफ से सही सलामत और दूसरी पीछे की ओर से टूटी हुई थी और इनका प्रयोग हेंडगन के पीछे लगे लकड़ी के भाग में स्क्रू कसने के लिए किया जाता था। बंदूक एवं इसके लकड़ी के अन्य भाग अभी भी खोये हुए हैं। किसी ओर बंदूक के अवशेष इस क्षेत्र के आसपास नहीं पाए गए हैं। दो बंदूकों के

मुखनाल समुद्री सतह में क्षैतिज रूप में तथा अन्य दो सतह से कोणीय रूप में पड़े हुए हैं। (चित्र 2) बंदूक के दोनों तरफ कड़िया हैं परंतु इसे उठाने के लिए कोई छल्ला नहीं है। इन बंदूकों को आकार आसानी से छोटा-बड़ा हो जाता है जिससे कि पास के लक्ष्यों को आसानी से निशाना बनाया जा सकता है। इसी प्रकार की बंदूके ओल्ड गोवा तथा अन्यान्य संग्रहालयों में रखी गई हैं। 218 ग्राम की कच्चे लोहे की गोली बंदूकों की स्थिति के पश्चिमी दिशा में पाई गई है। गोली का सामने का हिस्सा सामान्य से अलग पाया गया। समुद्री पानी के प्रभाव के कारण इन गोलियों का अंदरूनी हिस्सा गलकर खोखला हो गया था। प्रयोगशाला में गोली से पानी के कुप्रभाव को अलग किया गया। जिस स्थान से बंदूकें प्राप्त हुई थी उसी के आसपास के स्थलों से लोहे के दो लंगर प्राप्त हुए हैं जो लेटेराइट पत्थर के बीच में फंसे हुए हैं। इसी के समान आकार और रूप के लंगर गोवा के पुरातत्व संग्रहालय और गोवा राज्य संग्रहालय, पणजी में रखे गए हैं। (सिला त्रिपती, आदि. 2003)

अन्वेषण के दौरान हाथी के आठ दांत प्राप्त हुए हैं जिसकी लंबाई 15 से 31 से.मी. थी। इन दांतों का अधिकांश भाग तलछट में दफन हो गया था तथा कुछ भाग ही दिखाई दे रहा था। आठ दांतों में से केवल दो में ही कुछ लिखावट परिलक्षित होती है। एक दांत में अंग्रेजी के ICM लिखा हुआ है जिसमें से सिर्फ 'CM' दिखाई दे रहा है और 'I' मिट गया है। दूसरे कुछ दांतों में ज्यामितीय आकार दिखाई देते हैं। काफी अरसे से समुद्री जल में पड़े रहने के कारण ये दांत नरम, भंगुर और परतदार हो गए हैं। इसके अलावा बंदूकों की प्राप्तिस्थलों से पूर्व और उत्तरपूर्व दिशा में दरिआई घोड़े के अलग अलग आकार के दांतों का पता लगाया गया है जो कि आंशिक रूप से तलछट में धंसे हुए थे (चित्र-4)। यह सभी दांत पानी के अंदर लंबी अवधि तक रहने के कारण इनका रंग भूरा हो गया है जबकि मूल रूप से इनका रंग सफेद था। इन पर समुद्री वनस्पतियों का विकास भी देखा जा सकता है।

इसी क्षेत्र में वर्गाकार तथा गोलाकार कांच की बोतल के आधार आदि बरामद हुए हैं। सभी बोतलें गहरे हरे रंग की थीं और समुद्री प्रभाव के कारण इसका रंग भी क्षरित हो गया। अन्वेषण के दौरान टूटी चीनी मिट्टी के बरतनों के आधार, छल्ले, ढक्कन, आदि भी पाए गए। इन टुकड़ों के अंदर बाहर दोनों ही भागों में नीले और सफेद रंग की चित्रकारी दिखाई पड़ती है। इन बरतनों में से अधिकांश भग्नावस्था में ही प्राप्त हुए एवं एक भी साबुत जार, कटोरा या प्लेट नहीं मिल पाई। इसके अलावा मलवे के क्षेत्र (चित्र3) में एक ग्रेनाइट का ब्लाक भी अन्वेषित किया गया। यह ढेर एक विस्तृत क्षेत्र में अव्यवस्थित तरीके से विखरे पाए गए।

यह संभव है कि इस ब्लॉक का प्रयोग जहाज़ को स्थिर बनाए रखने के लिए प्रयुक्त बोझ के रूप में किया जाता रहा होगा।

सेंट जॉर्ज रीफ़

सेंट जॉर्ज रीफ़ ग्रांडे (ग्रांडी) द्वीप के पश्चिमी क्षेत्र में विस्तृत है (छबि-1) और 15 मीटर की गहराई से ही टेराकोटा की निर्माण सामग्री जैसे चिमनी ईंटें, रिज एवं फ़र्श की टाइलें, स्तंभ, ड्रम आदि प्राप्त हुए हैं (सिला त्रिपति et.al., 2003b)। यह टाइलें सफ़ेद मिट्टी की बनी हुई हैं जिस पर बासेल मिशन टाइल वर्क कंपनी 1965 की मुहर लगी हुई है। टूटे जहाज़ की दो लंबी लकड़ियाँ रिफ़ के निकट बरामद हुई हैं। लकड़ी के ऊपरी भाग में खांचे के कुछ निशान एवं निचला हिस्सा अंग्रेज़ी के U आकार के साथ समतल एवं चिकना है। जहाज़ के तख्ते की कार्बन डेटिंग से यह पता चलता है कि यह नष्ट जहाज़ उन्नीसवीं सदी का था।

ग्रैंडे द्वीप

ग्रैंडे द्वीप के अन्वेषण के दौरान केबिन के साथ स्टील का बना कार्गोजलयान, माल को तल में उतारने के लिए जहाज़ के डेक में एक खिड़की एवं ब्रिज (छबि-8) प्राप्त हुआ है। संभवतः यह एक सदी से कम पुराना है। इसका केबिन टूट-फूट चुका है और इसके निचले केबिन में बालू की मोटी तह जमी है जिससे यह अनुमान किया जाता है कि यह जहाज़ किसी तूफान में अपने लंगर को खोने के बाद डूब गया होगा और द्वीप के तट के पास पत्थर के पास बह आया होगा।

बागा

इसी तरह के ध्वस्त जहाज़ों का अन्वेषण बागा में तीन से छह मीटर की गहराई में किया गया। बागा के अंतःजल अन्वेषण में 6 मीटर पानी की गहराई में धातु का मलवा पड़ा मिला है। इस मलबे का अधिकांश भाग तलछट में दफ़न हो चुका है एवं केवल इसका एक छोटा भाग ही दृश्यमान है।

इसके अलावा सुंची-रीफ़ के पूर्वी मलबे से इंडो-अरेबियन जहाज़ का पत्थर का एक लंगर प्राप्त हुआ है। यह लंगर लेटेराइट के बीच प्राप्त हुआ। यह लेटेराइट से ही बना हुआ है एवं काफ़ी नाजुक हालत में है। इसका एक निचला छेद टूटा हुआ है एवं दूसरा छेद घिस गया है। लंगर की लंबाई 114 से.मी. और बज़न 100 कि.ग्रा. है। इसी प्रकार के दो इंडो-अरेबियन प्रकार के प्रस्तर लंगर ग्रैंडे द्वीप से प्राप्त हुए हैं। लंगर का कच्चा माल रेतीला पत्थर (sandstone) है। एक गहरा निशान इसके उपरी सतह

पर परिलक्षित होता है। लंगर का ऊपरी छेद, निचले छेद के मुकाबले छोटा है। लंगर का ऊपरी भाग गोलाकार की बजाय वर्गाकार है। लंगर के पत्थर का कच्चा माल क्राजार्डिट रेतीला पत्थर है एवं इसकी लंबाई 115 से.मी. और बज़न 130 कि.ग्रा. है।

चर्चा और निष्कर्ष

गोवा के समुद्री पुरातत्व अन्वेषण से यह पता चलता है कि सेंट जार्ज रीफ़ और सुंची रीफ़ में अधिक ध्वस्त जहाज़ प्राप्त हुए। इन जहाज़ों के डूबने का मुख्य कारण खराब मौसम, मानव त्रुटि के अलावा पत्थरों से टकरा रही। सुंची रीफ़ मलबे उच्च-ऊर्जा उथले जल क्षेत्र में आते हैं और यह क्षेत्र जहाज़ों के ध्वंसावशेषों के संरक्षण की दृष्टि संवाहक नहीं है। यह क्षेत्र स्पष्ट तौर पर यह संकेत करता है कि जहाज़ अधडूबी चट्टान से टकराया और डूब गया होगा। सुंची रीफ़ के एक बड़े क्षेत्र से मिट्टी के बरतन, बंदुक की गोली, ग्रेनाइट ब्लॉक आदि के सिवाय जहाज़ और उसके सामान के कोई अवशेष प्राप्त नहीं हुए। 16 वीं से 18 वीं सदी के मध्य पुर्तगाली नौसेना और व्यापारियों के द्वारा लोहे के लंगर बड़े पैमाने पर प्रयोग में लाए गए। सुंची रीफ़ से प्राप्त लंगर संकेत करते हैं कि यह जहाज़ भारतीय मूल का नहीं था। साधारणतः जहाज़ों में कई लंगर होते हैं हालांकि सुंची रीफ़ के ध्वंसावशेषों से केवल एक लंगर प्राप्त हुआ है। यह पता नहीं चल पाया है कि यह जहाज़ एक या एकाधिक लंगर लिए हुए थे। सेंट जार्ज रीफ़ की खोज से पिछली शताब्दियों में Basel mission company की व्यापारिक गतिविधियों का पता चलता है। ध्यानपूर्वक देखा जाए तो इस रीफ़ के दक्षिण-पूर्व और दक्षिण हिस्से में कलाकृतियों का संकेंद्रण सूचित करता है कि यह दुर्भाग्यशाली जहाज़ गोवा दक्षिण (मंगलोर या कालिकट की ओर से) ओर से आ रहा था और जब यह रीफ़ से टकराकर डूब गया। सेंट जार्ज रीफ़ में किया गया अंतःजलीय अन्वेषण एवं मेटल डिटेक्टर सर्वेक्षण से किसी प्रकार की धात्विक असंगति का पता नहीं चलता है; ऐसा लगता है कि यह लकड़ी के पेंदे से बना समुद्रगामी जहाज़ था।

गोवा के समुद्र से प्राप्त इंडो-अरेबियन प्रकार के प्रस्तर लंगर संकेत करते हैं कि गुजरात, महाराष्ट्र, केरल और लक्षद्वीप जाने वाले नाविकों ने गोवा तट का भी भ्रमण किया था क्योंकि इन जगहों से समान प्रकार के प्रस्तर लंगर प्राप्त हुए हैं। गोपाकपट्टनम के अन्वेषण से कोई विशेष निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं। गोवा तट के गहरे और उथले दोनों प्रकार के पानी में जहाज़ों के ध्वंसावशेषों के अन्वेषण और उत्खनन किया गया था। इन

अन्वेषणों से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र में जहाजों के ध्वंसावशेषों के पुरातत्व के लिए भरपूर संभावना मौजूद है। आगे भी इन स्थलों पर अन्वेषण जारी रहेंगे और उनके परिणाम गोवा के समुद्री और जहाजों के ध्वंसावशेषों के नए परिणाम सामने ला सकते हैं।

समुद्री गतिविधियों पर रिपोर्टों के अभाव के कारण इस लेख में दिए गए तथ्य इस दिशा में नई जानकारीयां प्रदान कर सकते हैं। हालांकि भविष्य में किए जाने वाले अध्ययन गोवा के समुद्री इतिहास की पर्तें खोल सकते हैं।

संदर्भ

चौहान, आर.आर.एस., 1988, सम इंटरैस्टिंग फाइनडिंग ऑफ सनकेन एंड रेकड सिपस इन इंडियन ओसियन ज्यूरिंग एनसिएंट एंड मिडीवल पिरीएड्स. इन एस.आर.राव (इडी.), मराइन आरकीओलोजी ऑफ इंडियन ओसियन कंट्रीस, नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ ओसियनओग्राफी, गोवा, 14-16

कोसटा, जे.सी., 1997 आरकीओलोजी : ट्रेशर ट्रोव. गोवा टुडे, (मई 1997), पणजी : 24-30

गुडीगर, पी. एंड सुन्दरेश., 1992, सम इम्पोर्टेंट सिपरेकस ऑन गोवा कोस्ट. जनरल ऑफ मरीन आरकीओलोजी, वोल.3:48-53

गुडीगर, पी., 2000, द स्टडी ऑफ एनसिएंट पोर्ट ऑफ गोपाकापत्तनम. टेकनिकल रिपोर्ट No.NIO/TR-12 /2000, नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ ओसियनओग्राफी, गोवा, 1-12

गुने. वि.टी., 1990, गोवास कोस्टल एंड ओवर सीस ट्रेड. इन टी. आर. डी सौजा (इड) गोवा थू द एजेस - II, न्यू दिल्ली : कॉसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, 117-135

हीरास, एच., 1932, प्री- पोर्तुगीस रीमेंस इन पोर्तुगीस इंडिया. जर्नल ऑफ बॉम्बे हिस्टोरिकल सोसाइटी, वोल.4(2):1-56.

मैथयु, के. एम्., 1988, हिस्टरी ऑफ द पोर्तुगीस नेवीगेसन इन इंडिया. न्यू दिल्ली : मित्तल पुब्लिकेसनस, 259-274.

मेकक्रीदल, जे. डब्लू., 1985, (रीप्रिन्टेड इन 1985). एनसिएंट इंडिया एज डेसक्राइबड बाय टोलमाय. दिल्ली : टुडे एंड टुमॉरो'स प्रिंटर्स एंड पुब्लिशर्स

राघाविह, जे., 1990, बसेल मिसन इंडसट्रिस इन मालाबार एंड साउथ कनाडा. न्यू दिल्ली : जीएन पब्लिशिंग हाउस.

राजगोपालन, एस., 1987. ओल्ड गोवा. आरकीओलोजी सर्वेऑफ इंडिया, न्यू दिल्ली.

स्कोफ, डब्लू.एच., 1974, द पेरीप्लस ऑफ द एरीथराइअन सी (2 न्ड एडीसन). न्यू दिल्ली : मुंशीराम मनोहरिअल सिराइकर, पी. पी., 1990, सरवे ऑफ द एनसिएंट सिलहरा - कदमबा पोर्ट ऑफ गोपाकापत्तनम जर्नल मराइन आरकीओलोजी, वोल. 1:52-54

सिला त्रिपति., एम्. सुजाता, राव, आर.वि., एंड राव, के. एस., 2005. युज ऑफ टिम्बर इन सिपबिल्डिंग इंडसट्री : आईडेंटीफीकेसन एंड एनालाईसिस ऑफ टिम्बर फ्रॉम सिपरेकस ऑफ गोवा कोस्ट, इंडिया. करंट साइंस, वोल.89 (6):1022-1027

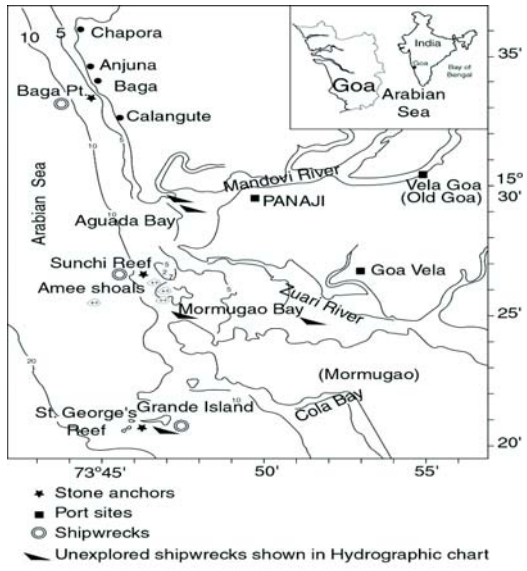
सिला त्रिपति., गौर, ए. एस., सुन्दरेश., एंड वोरा, के.एच., 2004. सिपरेक आरकीओलोजी ऑफ गोवा : एविडेंस ऑफ मारीटाइम कोन्टेक्ट्स विथ अदर कंट्रीस. करंट साइंस, वोल. 86(9):1238-1245

सिला त्रिपति., गौर, ए. एस., सुन्दरेश., 2003. ए. एंकरस फ्रॉम गोवा वाटर्स, सेन्ट्रल वेस्ट कोस्ट ऑफ इंडिया : रिमेन्स ऑफ गोवास ओवरसीस ट्रेड कोन्टेक्ट्स विथ अरेबीयन कंट्रीस एंड पोर्तुगल. बुलेटिन ऑफ द ओस्टरलाएशियन इंस्टिट्यूट फॉर मेरटाइम आरकीओलोजी, वोल 27:97-106.

सिला त्रिपति., सुन्दरेश., गौर, ए. एस., गुडीगर, पी., एंड बनदोडकर., एस.एन. 2003 बी, एक्सप्लोरेसन ऑफ बसेल मिशन कंपनी सिपरेक रिमेन एट सेंट जोर्ज रीफ ऑफ गोवा, वेस्ट कोस्ट ऑफ इंडिया : इम्पेक्ट ऑफ द बसेल मिशन कंपनी. ओन सोसाइटी एंड कल्चर. इंटर नेशनल जनरल ऑफ नौटिकल आरकीओलोजी, वोल.32(1):111-120.

सिला त्रिपति., गौर, ए. एस., सुन्दरेश., गुडीगर, पी., एंड बनदोडकर., एस.एन. 2002, मरीन आरकीओलोजी एक्सप्लोरेसन ऑफ गोवा, इंडिया. इंटरनेशनल जनरल ऑफ मारी टाइम हिस्ट्री, वोल 14(2):225-245.

सिला त्रिपति., 2002. पिरामिडल एंकर स्टोन फ्रॉम बागा वाटर्स ऑफ गोवा, वेस्ट कोस्ट ऑफ इंडिया. द मराइनर्स मिरर, वोल.88(1):6-13.



Sites where marine archaeological explorations have been carried out.

चित्र. 1



चित्र. 2



चित्र. 3



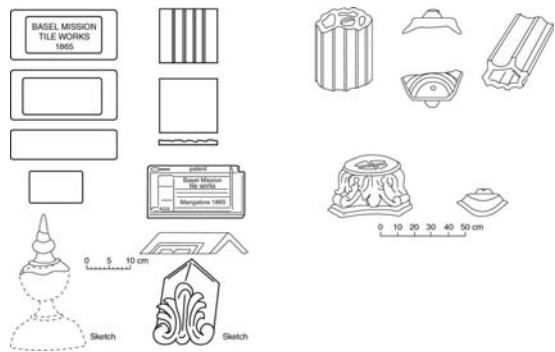
चित्र. 4



चित्र. 5



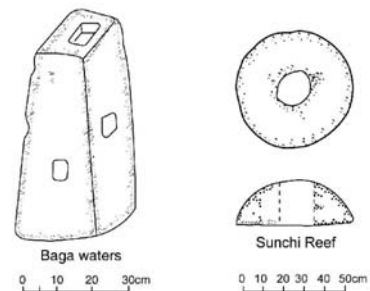
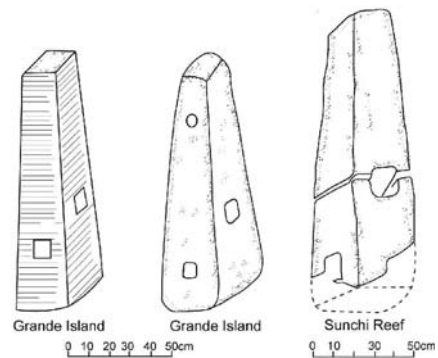
चित्र. 6



चित्र. 7



चित्र. 8



चित्र. 9



चित्र. 10



चित्र. 11

सिला त्रिपति, समुद्री पुरातत्व विभाग
sila@nio.org
 राकेश शर्मा, हिंदी अनुभाग
srakesh@nio.org